

रेशमा जब कॉलेज से निकली तब शाम होने वाली थी। ठंड के दिन थे और ठंडी हवा चल रही थी। आकाश में घने बादल छाए हुए थे। शायद वारिश भी हो। रेशमा ने ऊनी शाल अच्छे से लपेटा और ऑटो के लिए इधर-उधर नज़रें घुमाई, पर उसे कोई ऑटो नज़र आया। उसने पैदल ही घर जाने की सोची और लंबे-लंबे डग भरते हुए घर की ओर चल पड़ी। रास्ता करीब करीब सुनसान था। इक्का दुक्का लोग नजर आ रहे थे। रेशमा को एक भय का एहसास हुआ। उसने सर को झटका और तेज चलने लगी। अभी वह कुछ ही दूर गई थी कि उसे पीछे मोटरसाइकिल की आवाज सुनाई दी। उसने पीछे मुड़कर देखा, मोटरसाइकिल पर दो लड़के बैठे थे। उसे कुछ अनिष्ट की आशंका हुई। उसने अपने आपको इससे निपटने के लिए तैयार किया। तभी मोटरसाइकिल एकदम पास आ गई और पीछे बैठे लड़के ने उसकी शाल खींच ली। रेशमा पहले तो एकदम घबड़ा गई, पर फिर अपने आपको सम्हाला और जोर से बोली, 'यह क्या बदतमीजी है? मेरी शाल वापस करो'। दोनों लड़कों के चेहरों पर कुटिलता भरी मुस्कान आई। एक ने हंसते हुए कहा, 'उसके लिए तुम्हें मेरे साथ आना होगा। इसके पहले कि वह कुछ समझती, पीछे बैठे लड़के ने उसे अपनी ओर खींच लिया और जबरन बाइक पर बैठा लिया। बाइक तेजी से चलने लगी। रेशमा छटपटाने लगी। लड़के ने दाएं हाथ से उसका मुंह बन्द कर रक्खा था। जब बाइक चौराहे के पास पहुंची तभी रेशमा ने मोटरसाइकिल पर एक लड़के को देखा और जोर जोर से हाथ हिलाने लगी। वह मोटरसाइकिल तेजी से उनकी ओर बढ़ी। कुछ ही देर में फासला कम हो गया और उस अपरिचित ने अपनी मोटरसाइकिल सामने लगा दी। रेशमा ने उसे देखा। वह एक सुगठित शरीर बाला सुन्दर युवक था। उसने जींस और टी-शर्ट पहन रखी थी। रेशमा को कुछ उम्मीद की किरण दिखाई दी। वे दोनों इतनी आसानी से उसे जाने देने वाले नहीं थे। एक ने उसे पकड़ रखा था और दूसरा उस युवक से भिड़ पड़ा। जल्दी ही उस युवक ने उसे धराशायी कर दिया। उसे पकड़कर लड़के ने चाकू निकाल लिया और रेशमा के गले पर रख दिया। आगे बढ़ते हुए वह युवक रुक गया। तभी रेशमा ने अपनी दाहिनी कोहनी लड़के के पेट में दे मारी। वह आह कर झुक गया। उसका ध्यान भंग होते ही युवक ने उसे दबोच लिया। उस युवक ने उन दोनों को पुलिस के हवाले कर दिया। युवक ने रेशमा को घर तक छोड़ने की पेशकश की। रेशमा पेशोपेश में पड़ गयी। घर वाले और मोहल्ला वाले क्या सोचेंगे? युवक ने उसके भाव को पढ़ लिया। उसने कहा, 'आप संकोच न करें। आईए'। रेशमा जब घर पहुंची तब अन्धेरा हो चुका था। देर भी काफी हो चुकी थी। रेशमा के घर वाले भी चिन्ता कर रहे थे। जब उन्होंने रेशमा को उस युवक के साथ देखा तो वे मुसकुराने लगे। रेशमा तो डांट खाने सोच रही थी और उन्हें मुस्कुराते देखकर सोच में पड़ गई। उन्होंने उस युवक को सम्मान से बुलाया और घर में बैठाया। अब्बा ने रेशमा का चेहरा देखा और हंसने लगे। 'अरे पगली, यह अपने चचा जान का बेटा हसन है। इसके साथ ही तुम्हारे निकाह की बात चल रही है। रेशमा के चेहरे पर शर्म की लाली छा गई। उसने हसन को देखा, जो उसी की तरफ देख रहा था। रेशमा शरमा कर घर के अन्दर चली गयी।